M T W T F S S
1 2 3 4 5 6 7
8 9 10 11 12 13 14
15 16 17 18 19 20 21
22 23 24 25 26 27 28
29 30 31
Sunrise : 05:08 am - Sunset : 06:52 pm
SATURDAY 15 JUNE 2019
WK 24 (166-199)

देखने में समतल न होकर यह अखरोट की तरह उबड़-खाबड़ होता है। जिस व्यक्ति का प्रमस्तिष्क जितना ही अधिक उबड़-खाबड़ होता है, वह उतना ही अधिक तीव्र बुद्धि का होता है। प्रमस्तिष्क के ऊपर एक भूरे रंग का पदार्थ जाली की तरह बिछा रहता है। इस भूरे पदार्थ के नीचे उजला पदार्थ होता है।

बनावट की दृष्टि से प्रमस्तिष्क के दो भाग हैं- बाँयाँ और दाहिना भाग। बायाँ भाग शरीर के दाहिने अंगों की क्रियाओं को नियंत्रित करता है और दाहिना भाग शरीर के बायें अंगों की क्रियाओं को। दूसरे शब्दों में, दाहिने हाथ-पैर आदि के द्वारा तरह-तरह के शारीरिक व्यवहार करने के लिए प्रमस्तिष्क का बायाँ भाग और बायें हाथ-पैर के व्यवहारों के लिए प्रमस्तिष्क का दाहिना भाग आदेश देता है। इस तरह का ज्ञान और अनुभूतियाँ भी हमें प्रमस्तिष्क द्वारा ही प्राप्त होती हैं।

प्रमस्तिष्क में दो बड़ी दरारें पायी जाती हैं। बीच वाली दरार जो ऊपर है रोलैण्डो की दरार (Fissure of rolando) कहलाती है तथा नीचे की ओर से जो दरारें हैं, उन्हें सिलवियस की दरार (fissure of sylvius) कहलाती है। इन दरारों के सहारे प्रमस्तिष्क चार खण्डों में बँटा है:—

(i.) पृष्ठपालि (occipital lobe)
(ii.) मध्यपालि (Parietal lobe)
(iii) अग्रपालि (Frontal lobe)
(iv) शंखपालि (Temporal lobe)

SUN 16

पृष्ठपालि प्रमस्तिष्क का पिछला भाग है। मध्यपालि का स्थान इसमें आगे और रोलैण्डो की दरार की बगल में है। रोलैण्डो की दरार तथा सिलविमस की दरार के बीच प्रमस्तिष्क के आगे का जो

The future of business is SOCIAL
It's what you learn

सबसे बड़ा हिस्सा है उसे अग्रपालि कहते हैं। सिलवियस की दरार के दूसरी ओर लम्बे रूप में शंखपालि का स्थान है।

प्रमस्तिष्क में तरह तरह के ज्ञान के लिए अलग-अलग केन्द्र बने हुए हैं। दृष्टि सम्बन्धी ज्ञान के लिए पृष्ठपालि (Occipital lobe), श्रवण सम्बन्धी ज्ञान के लिए शंखपालि (temporal lobe), त्वचा-सम्बन्धी ज्ञान के लिए मध्यपालि (parietal lobe) आदि निश्चित स्थान मध्यपालि में है। चिन्तन, सीखना, कल्पना आदि उच्च मानसिक क्रियाएँ मस्तिष्क के किसी केन्द्रविशेष से संचालित नहीं होती इसमें सम्पूर्ण प्रमस्तिष्क कार्य करता है। जो भी हो इतना तो सही है कि सभी प्रकार की चेतन, मानसिक और शारीरिक क्रियाओं का संचालन प्रमस्तिष्क के द्वारा होता है।

प्रमस्तिष्क के द्वारा कई तरह के कार्य होते हैं:-

1. संवेदी कार्य (Sensory functions)
2. पेशीय कार्य (Motor functions)
3. साहचर्यात्मक कार्य (Associative functions)

अतः मस्तिष्क अत्यन्त जटिल एवं नाजुक संरचना है। मस्तिष्क की रचना अरबों स्नायुओं से हुई है तथा ये परस्पर जाल की तरह फैले होते हैं। इसी जटिल रचना द्वारा मनुष्य चिन्तन, कल्पना, जटिल समस्याओं का समाधान आदि क्रियाओं को करने में समर्थ होता है।

—x—